पाठ–2

नींव की ईंट

रामवृक्ष बेनीपुरी

जन्म– 1899 ई.

मृत्यु– 1968 ई.

लेखक परिचय

राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय सहभागी, विचारक, चिन्तक और पत्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी शुक्लोत्तर युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आठ वर्ष जेल में व्यतीत करने के साथ ही समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का कार्य करते रहे। इनका जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी नामक गाँव में हुआ था। गाँधी जी और जयप्रकाश नारायण से प्रभावित हो, अध्ययन को छोड़कर पूर्णतया स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रहे। उनकी रचनाओं में जेल के अनुभव के साथ देशप्रेम, साहित्य प्रेम, त्याग की महत्ता, साहित्यकारों के प्रति जो सम्मान का भाव दर्शाया गया है, वह अविस्मरणीय है। उनका साहित्य, चिन्तन को निर्भीक तथा कर्म को तेज बनाता है।

कृतियाँ

पतितों के देश में, चिता के फूल, कैदी की पत्नी, गेहूँ और गुलाब, माटी, जंजीरें और दीवारें (संस्मरण और निबन्ध) अम्बपाली, सीता की माँ, संघमित्रा, तथागत, अमरज्योति (नाटक) विद्यापति की पदावली (सम्पादन), जयप्रकाश नारायण (जीवनी)

पाठ परिचय

प्रस्तुत ललित निबन्ध भारत के नवनिर्माण की पृष्ठभूमि में देश के नवयुवकों को कर्मठता, त्याग व निःस्वार्थ भावना का संदेश तथा उद्बोधन देता है। राष्ट्र की उन्नति का भवन युगों तक लाखों–करोड़ों नवयुवकों के सतत् त्याग और निर्माण भावना की नींव पर बनता, सँवरता और भव्य बनता है। इस सत्य की ओर इंगित करते हुए लेखक भारत के नवयुवकों को मात्र 'उपभोग' की मनोवृति त्यागकर निर्माण की मनोवृति अपनाने की प्रेरणा दे रहा है।

पाठ की अनुच्छेद–योजना विशेषतः ध्यान आकृष्ट करती है। एक–एक विचार भावपूर्ण वाक्यों में अभिव्यक्त किए गए हैं और ऐसे एक–एक दो–दो वाक्य अनुच्छेद बनाते हैं, किन्तु वे पाठक को बहुत कुछ सोचने विचारने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुन्दर, सुदृढ़ इमारत है, वह किस पर टिकी है ? इसके कंगूरे को आप देखा करते हैं। क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर भी ध्यान दिया है ? दुनिया चमक देखती है, ऊपरी आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है, उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है ? ठोस सत्य सदा शिवम् है, किन्तु यह हमेशा ही सुन्दरम् भी हो, यह आवश्यक नहीं हैं। सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन,साथ–साथ जन्मा करते है, जिया करते हैं।

हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं, इसलिए सत्य से भी भागते हैं। नहीं तो हम इमारत के गीत, नींव के गीत से प्रारम्भ करते । वह ईंट धन्य है, कट–छँटकर कंगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोगों को अपनी और आकृष्ट करती है किन्तु धन्य है वह ईंट, जो जमीन से सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी। क्योंकि इसी पहली ईंट पर, उसकी मजबूती और पुख्तापन पर सारी इमारत की अस्ति–नास्ति निर्भर है।

उस ईंट को हिला दीजिए, कंगूरा बेतहाशा जमीन पर आ रहेगा। कंगूरे के गीत गाने वालों आओ, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट जो जमीन में इसलिए गड़ गई कि दुनिया को इमारत मिले, कंगूरा मिले।

वह ईंट जो सब ईटों से ज्यादा पक्की थी, यदि ऊपर लगी होती तो कंगूरे की शोभा सौगुनी कर देती। किन्तु उसने देखा,कि इमारत की पायेदारी उसकी नींव पर निर्भर होती है, इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित किया।

वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अन्दर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत जमीन के सौ हाथ ऊपर जा सके। वह ईंट, जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे।

वह ईंट जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुन्दर सृष्टि देखे।

सुन्दर सृष्टि! सुन्दर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का। सुन्दर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की–पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है।

सुन्दर समाज बने, इसलिए कुछ तपे–तपाये लोगों को मौन–मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

शहादत और मौन मूक! जिस शहादत को शोहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, यह इमारत का कंगूरा है – मंदिर का कलश है।

हाँ, शहादत और मौन–मूक ? समाज की आधारशिला यही होती है। ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया, आप कह लीजिए कि मेरी समझ में, ईसाई धर्म को अमर बनाया उन लोगों ने, जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम उत्सर्ग कर दिया।

उसमें से कितने जिन्दा जलाये गए, कितने सूली पर चढ़ाये गए, कितने वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक जन्तु की भूख प्यास का शिकार हुए।

किन्तु ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य–प्रताप से फल–फूल रहा है।

ये नींव की ईंट थे, गिरजाघर के कलश उन्हीं की शहादत से चमकते हैं।

आज हमारा देश आजाद हुआ सिर्फ उनके बलिदानों के कारण नहीं, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है।

देश का शायद ही ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

हम जिसे देख नहीं सकें, वह सत्य नहीं है– यह है मूढ़ धारणा। ढूँढने से सत्य मिलता है। हमारा काम है, धर्म है, ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना।

सदियों के बाद नये समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया है। इस नये समाज के निर्माण के लिए ही हमें नींव की ईंट चाहिए।

अफ़सोस! कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा–होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

सात लाख गाँवों का नव निर्माण। हजारों शहरों और कारखानों का निर्माण। कोई शासक इसे सम्भव नहीं कर सकता। जरूरत है ऐसे नौजवानों की, जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें। जो एक नई प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नई चेतना से अभिभूत, जो शाबाशी से दूर हो, दल बन्दियों से अलग।

जिनमें कंगूरा बनने की कामना न हो, कलश कहलाने की जिनमें वासना भी न हो। सभी कामनाओं से दूर–सभी वासनाओं से दूर।

उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है– हमारी नींव की ईंट किधर है?

देश के नौजवानों को यह चुनौती है ?

शब्दार्थ

आवरण – परदा	शहादत –बलिदान
कंगूरा – शिखर	शोहरत – प्रसिद्धि
लाल सेहरा – त्याग	मौन–मूक – शब्दरहित, पूर्णतया प्रसिद्धि रहित

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नींव की ईंटों को धन्य क्यों माना गया है?

   (क) लाल रंग होने के कारण (ख) सुन्दर होने के कारण

   (ग) आधार शिला बनने के कारण (घ) ठोस होने के कारण

2. सुन्दर सृष्टि हमेशा क्या खोजती है?

   (क) अभ्यास (ख) दौलत

   (ग) बलिदान (घ) मक्कारी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. लेखक के अनुसार देश को आज़ाद कराने का श्रेय किसे मिलना चाहिए?
4. हमें सत्य की खोज के लिए किस ओर ध्यान देने के लिए लेखक ने प्रेरित किया है ?
5. नींव की ईंट और कंगूरा शब्द किन–किन लोगों के सूचक हैं ?
6. निम्न शब्दों के अर्थ भेद बताइए–

   (क) निर्वाण–निर्माण (ख) आवरण–आमरण

   (ग) कामना–वासना (घ) इमारत–इबारत

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

7. "हम जिसे देख नहीं सके, वह सत्य नहीं है, यह मूढ़ धारणा है।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?
8. 'कँगूरा बनने की होड़ा–होड़ी मची है।" लेखक ने इस कथन के माध्यम से क्या इंगित किया है ?
9. 'सुन्दर सृष्टि हमेशा बलिदान खोजती है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

10. 'उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है– हमारी नींव की ईंट किधर है?' कथन के आलोक में वर्तमान में समाज की युवाओं से क्या अपेक्षा है? स्पष्ट कीजिए।
11. 'नींव की ईंट' पाठ के आधार पर नींव की ईंट के लक्ष्यार्थ को स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग
2. ग

•••